

# यीशु से क्षमा कैसे माँगनी चाहिए?

## फरीसी के घर पापिनी स्त्री को क्षमा (लूका 7:36-50)

36 फिर किसी फरीसी ने उससे विनती की कि वह उसके साथ भोजन करे, अतः वह उस फरीसी के घर में जाकर भोजन करने बैठा। 37 उस नगर की एक पापिनी स्त्री यह जानकर कि वह फरीसी के घर में भोजन करने बैठा है, संगमरमर के पात्र में इत्र लाई,\* 38 और उसके पाँवों के पास, पीछे खड़ी होकर, रोती हुई उसके पाँवों को आँसुओं से भिगोने और अपने सिर के बालों से पोंछने लगी, और उसके पाँव बार-बार चूमकर उन पर इत्र मला। 39 यह देखकर वह फरीसी जिसने उसे बुलाया था, अपने मन में सोचने लगा, “यदि यह भविष्यद्वक्ता होता तो जान जाता कि यह जो उसे छू रही है, वह कौन और कैसी स्त्री है, क्योंकि वह तो पापिनी है।” 40 यीशु ने उसके उत्तर में कहा, “हे शमौन, मुझे तुझ से कुछ कहना है।” वह बोला, “हे गुरु, कह।” 41 “किसी महाजन के दो देनदार थे, एक पाँच सौ और दूसरा पचास दीनार का देनदार था। 42 जब उनके पास पटाने को कुछ न रहा, तो उसने दोनों को क्षमा कर दिया। इसलिये उनमें से कौन उससे अधिक प्रेम रखेगा?” 43 शमौन ने उत्तर दिया, “मेरी समझ में वह, जिसका उसने अधिक छोड़ दिया।” उसने उससे कहा, “तू ने ठीक विचार किया है।” 44 और उस स्त्री की ओर फिरकर उसने शमौन से कहा, “क्या तू इस स्त्री को देखता है? मैं तेरे घर में आया परन्तु तू ने मेरे पाँव धोने के लिये पानी न दिया, पर इसने मेरे पाँव आँसुओं से भिगोए और अपने बालों से पोंछा। 45 तू ने मुझे चूमा न दिया, पर जब से मैं आया हूँ तब से इसने मेरे पाँवों का चूमना न छोड़ा। 46 तू ने मेरे सिर पर तेल नहीं मला, पर इसने मेरे पाँवों पर इत्र मला है। 47 इसलिये मैं तुझ से कहता हूँ कि इसके पाप जो बहुत थे, क्षमा हुए, क्योंकि इसने बहुत प्रेम किया; पर जिसका थोड़ा क्षमा हुआ है, वह थोड़ा प्रेम करता है।” 48 और उसने स्त्री से कहा, “तेरे पाप क्षमा हुए।” 49 तब जो लोग उसके साथ भोजन करने बैठे थे, वे अपने-अपने मन में सोचने लगे, “यह कौन है जो पापों को भी क्षमा करता है?” 50 पर उसने स्त्री से कहा, “तेरे विश्वास ने तुझे बचा लिया है, कुशल से चली जा।”

इस पापिनी स्त्री का उदाहरण हमें यह सिखाता है कि प्रभु यीशु से क्षमा माँगने का सबसे प्रिय तरीका क्या है।

## क्या खास था इस स्त्री की क्षमा माँगने में?

1. उसने यीशु से एक भी शब्द नहीं कहा – फिर भी यीशु ने कहा, “तेरे पाप क्षमा हुए, तेरे विश्वास ने तुझे बचा लिया।”
2. उसने बस प्रेम और समर्पण दिखाया।
3. उसका तरीका शब्दों से नहीं, बल्कि उसके कार्यों से प्रकट हुआ।

## उसने कैसे क्षमा माँगी?

- वह खामोशी से यीशु के चरणों में बैठ गई।
- अपने आँसुओं से उनके पाँव धोए।
- अपने बालों से उन्हें पोंछा।
- इत्र से उनके पाँव अभिषेक किया।

इससे हमें क्या सीखना चाहिए?

1. यीशु को सिर्फ शब्दों की नहीं, सच्चे मन से पश्चाताप और प्रेम की ज़रूरत होती है।
2. क्षमा माँगने का असली तरीका यह है कि हम अपने पापों पर पछताएं और सच्चे दिल से अपने जीवन को प्रभु को समर्पित करें।
3. यीशु बाहरी आडंबर नहीं देखते, बल्कि दिल की सच्चाई को देखते हैं।
4. वह प्रेम और विश्वास को सबसे अधिक महत्व देते हैं।

## बिना निमंत्रण के जाना - सच्चे विश्वास का प्रमाण

इस घटना से यह स्पष्ट होता है कि उस स्त्री ने किसी निमंत्रण का इंतजार नहीं किया।

### इसका क्या अर्थ है?

#### 1. लोग क्या कहेंगे, इसका डर नहीं रखा -

- उसे पता था कि लोग उसका मज़ाक उड़ाएँगे।
- उसे यह भी मालूम था कि उसकी पापी ज़िंदगी को लेकर लोग कटाक्ष करेंगे।
- फिर भी उसने किसी की परवाह नहीं की।

#### 2. उसे विश्वास था कि यीशु उसे ठुकराएँगे नहीं -

- वह जानती थी कि जिसके पास वह जा रही है, वह बाकी सबसे बड़ा है।
- उसने यह भरोसा किया कि यीशु उसे दंडित नहीं करेंगे, बल्कि उसके मन की पीड़ा को समझेंगे।
- उसे यह भी विश्वास था कि यीशु उसे दोष देने या अपमानित करने के बजाय प्रेम देंगे।

### यही है सच्चा विश्वास

- जब हम अपने संकोच, भय, और समाज की परवाह किए बिना यीशु के पास जाते हैं, तो वही विश्वास हमें बचा लेता है।
- "तेरे विश्वास ने तुझे बचा लिया।" - यीशु ने इसी विश्वास को देखा और उसे क्षमा कर दिया।

हमें क्या सीखना चाहिए?

- यीशु के पास आने के लिए किसी निमंत्रण की ज़रूरत नहीं होती।
- लोग क्या कहेंगे, इसकी परवाह छोड़कर, पूरे मन से उनके पास जाना चाहिए।
- हमारे अतीत के पाप कितने भी बड़े क्यों न हों, यीशु हमें प्रेम से अपनाने के लिए तैयार हैं।

---

## पीछे खड़ी होकर चरणों में गिरना - सच्चे समर्पण की पहचान

### पापिनी स्त्री आगे क्यों नहीं आई, बल्कि पीछे क्यों खड़ी हुई?

- उसे अपने पापों का पूरा एहसास था।
- वह खुद को यीशु के सामने खड़े होने के योग्य नहीं मानती थी।
- उसने अपने दोष और लज्जा के कारण सिर झुका लिया।
- लेकिन यीशु ने उसे नज़रअंदाज नहीं किया, बल्कि सबसे अधिक प्रेम और आशीर्वाद दिया।

हमें इससे क्या सीखना चाहिए?

- जब भी हम पाप करें, तो यीशु के चरणों में सिर झुकाकर खड़े हो जाएँ, न कि अभिमान में सिर ऊँचा करके उनके सामने बहस करें।
- हो सकता है कि यीशु हमारी नासमझी और बचपन को क्षमा कर दें, लेकिन हमें कोई अधिकार नहीं कि हम पाप करके उनके सामने अकड़ दिखाएँ।

## चरणों में ही क्यों खड़ी हुई?

- जो विश्वासघात करना चाहता है, वह पीठ पीछे खड़ा होता है ताकि वार कर सके।
- जो पूर्ण समर्पण करना चाहता है, वह चरणों में झुक जाता है।
- उस स्त्री ने यीशु के चरणों में गिरकर यह साबित किया कि वह खुद को पूरी तरह समर्पित कर रही है।

हमें इससे क्या सीखना चाहिए?

- जब हम यीशु के पास आएँ, तो पूरी विनम्रता और आत्मसमर्पण के साथ आएँ।
  - उनके चरणों में गिरकर कहें - "मैं खुद को तेरे हवाले करती हूँ।"
  - यही सच्चा पश्चात्ताप और क्षमा पाने का मार्ग है।
- 

## अपने साथ इत्र लाना - पूर्ण समर्पण का प्रतीक

### स्त्री अपने साथ इत्र क्यों लाई?

- इत्र उसके जीवन की सबसे प्रिय और महत्वपूर्ण वस्तु थी।
- वचन के अनुसार वह एक पापिनी स्त्री थी, जिसका अर्थ है कि वह अपने श्रृंगार पर विशेष ध्यान देती थी।
- इत्र श्रृंगार का अहम हिस्सा था, जिससे स्पष्ट होता है कि यह उसकी दिनचर्या का अभिन्न भाग था।

### सही मार्ग क्या है?

- हमें अपनी सबसे मूल्यवान चीज़ें यीशु के चरणों में समर्पित कर देनी चाहिए, ताकि वे हमें पाप में गिराने के बजाय पवित्रता की ओर ले जाएँ।
- जिस तरह उस स्त्री ने अपने इत्र को यीशु के चरणों में उड़ेल दिया, हमें भी अपनी इच्छाएँ और अहंकार पूरी तरह प्रभु को अर्पित कर देना चाहिए।

हमें इससे क्या सीखना चाहिए?

- हमें भी अपनी वह चीज़ प्रभु को अर्पित कर देनी चाहिए जो हमें पाप की ओर ले जाती है।
  - चाहे वह चीज़ अच्छी हो या बुरी, अगर वह हमें गलत मार्ग पर ले जा रही है, तो हमें उससे मुक्त हो जाना चाहिए।
  - यह इत्र हमारे जीवन में अन्य रूपों में भी हो सकता है, जैसे—
    - सौंदर्य (अगर वह अभिमान का कारण बनता है)
    - धन (अगर वह लालच या बुरे कार्यों की जड़ बनता है)
    - ज्ञान का अहंकार (अगर वह विनम्रता को नष्ट करता है)
-

## अपने आँसुओं से पैर भिगोए

### अपने आँसुओं से पैर क्यों भिगोए?

यह आँसू नहीं, पश्चाताप था

- वह यीशु से कुछ माँग नहीं रही थी, बल्कि अपने पापों का पश्चाताप कर रही थी।
- उसने एक शब्द भी नहीं कहा, न कोई शिकायत की, न कोई सफाई दी।
- उसके आँसू उसकी आत्मा का दर्द और पवित्र हृदय से बहता हुआ पश्चाताप था।

### आँसुओं का अर्थ क्या था?

- ये आँसू उसके पापों को धोने का प्रतीक थे।
- वह मान रही थी कि "मैं इतनी अपवित्र हूँ कि मेरे आँसू ही मेरे पापों को धो सकते हैं।"
- उसके पास कोई और साधन नहीं था, न कोई भेंट, न कोई बहाना—बस एक टूटा हुआ दिल और पश्चाताप।

हमें इससे क्या सीखना चाहिए?

- जब हम सच्चे मन से प्रभु के पास आते हैं, तो हमें बहानों की ज़रूरत नहीं होती, सिर्फ पश्चाताप की ज़रूरत होती है।
- प्रभु हमारे टूटे हुए हृदय को नहीं ठुकराते, बल्कि हमें प्रेम से स्वीकार करते हैं।
- अपने पापों को छिपाने या तर्क देने के बजाय, हमें पूरी सच्चाई और नम्रता के साथ प्रभु के सामने आकर पश्चाताप करना चाहिए।
- यह सबसे शुद्ध तरीका है अपने पापों को धोने का—आत्मा की गहराई से बहते आँसुओं के द्वारा।

---

## अपने बालों से पोंछा

### अपने बालों से क्यों पोंछा?

ये केवल बाल नहीं थे—यह समर्पण था

- जब उसने आँसुओं से यीशु के पाँव भिगोए, तो उसका पश्चाताप अधूरा था।
- पश्चाताप तभी सार्थक होता है जब हम यह निश्चय कर लें कि उस गलती को दोबारा नहीं दोहराएँगे।
- बालों से पोंछना इस संकल्प का प्रतीक था कि अब वह अपने पुराने पापों में नहीं लौटेगी।

बालों से पोंछने का गहरा अर्थ

- बाल नारी के गौरव और सुंदरता का प्रतीक होते हैं।
- उस स्त्री ने अपने गौरव और आत्म-सम्मान को यीशु के चरणों में समर्पित कर दिया।
- यह दर्शाता है कि वह अब अपने पुराने जीवन को पूरी तरह छोड़ चुकी है।

हमें इससे क्या सीखना चाहिए?

- केवल आँसू बहाना ही पर्याप्त नहीं है, हमें अपने जीवन में बदलाव भी लाना होगा।
- पश्चाताप का असली प्रमाण यह है कि हम पाप को फिर से न दोहराने का दृढ़ निश्चय करें।

- जब हम यीशु के सामने आत्मसमर्पण करते हैं, तो हमें अपने जीवन की हर चीज़—गौरव, इच्छाएँ, और अहंकार—उसे अर्पित कर देना चाहिए।
  - यही सच्ची क्षमा और परिवर्तन की निशानी है।
- 

## पैरों में इत्र मलें

### पैरों में इत्र क्यों मलें?

#### 1. पश्चाताप के बाद आराधना

- जब उस स्त्री ने पश्चाताप कर लिया और फिर से पाप न करने का निश्चय कर लिया, तो अब उसकी आराधना स्वीकार करने योग्य हो गई।
- इत्र एक भेंट थी जो वह यीशु के लिए लाई थी, लेकिन यह तब तक स्वीकार्य नहीं थी जब तक कि उसने अपने आँसुओं से पाप धो न लिया और अपने बालों से पोंछकर नए जीवन का संकल्प न ले लिया।
- अब वह यीशु के चरणों में इत्र मलकर अपनी सच्ची आराधना व्यक्त कर रही थी।

#### 2. इत्र केवल सुगंध नहीं था, यह प्रेम और समर्पण था

- इत्र एक बहुमूल्य वस्तु थी, जिसे वह अपने पुराने जीवन में स्वयं के लिए इस्तेमाल करती होगी।
- अब उसने अपने सबसे प्रिय और मूल्यवान चीज़ को प्रभु के चरणों में समर्पित कर दिया।
- यह दिखाता है कि वह अब अपना पूरा जीवन प्रभु को अर्पित कर चुकी थी।

#### 3. हमें इससे क्या सीखना चाहिए?

- सच्ची आराधना वही है जो पवित्र हृदय से आती है।
  - केवल बाहरी भेंट नहीं, बल्कि पश्चाताप के आँसू और पाप से मुक्त होने का संकल्प ज़रूरी है।
  - जब हम अपने अहंकार, इच्छाओं और पापों को प्रभु के चरणों में रख देते हैं, तब ही हमारी आराधना ग्रहणयोग्य होती है।
- 

## आराधना से पहले पश्चाताप

### पहले आँसू, फिर इत्र—पहले इत्र क्यों नहीं?

#### 1. आराधना से पहले पश्चाताप ज़रूरी है

- खुदा की सच्ची आराधना आत्मा और सच्चाई से की जाती है।
- जब तक कोई व्यक्ति पूरी तरह अपने पापों को स्वीकार नहीं कर लेता, उनका पश्चाताप नहीं करता और उन्हें न दोहराने की प्रतिज्ञा नहीं लेता, तब तक उसकी आराधना या भेंट में सच्चाई नहीं होती।
- पहले हृदय को साफ़ करना ज़रूरी है, फिर आराधना स्वीकार्य होती है।

## 2. आँसू - आत्मा का पश्चाताप

- आँसू इस बात का प्रमाण हैं कि इंसान को अपने पापों का अहसास हो गया है।
- यह शुद्धिकरण की प्रक्रिया है, जो हमें प्रभु के सामने नम्र और योग्य बनाती है।

## 3. बालों से पोंछना - नए जीवन का संकल्प

- केवल आँसू बहाना पर्याप्त नहीं है, बल्कि उन्हें पोंछकर नए जीवन का निर्णय लेना भी आवश्यक है।
- यह दर्शाता है कि पश्चाताप के बाद हमें पुराने पापों की ओर लौटना नहीं है।

## 4. इत्र - पवित्र आराधना

- जब हृदय शुद्ध हो जाता है और नया जीवन जीने का संकल्प ले लेता है, तब ही इत्र लगाना सार्थक होता है।
- इत्र आराधना का प्रतीक है, लेकिन यह तब तक स्वीकार्य नहीं होता जब तक आत्मा पूर्ण रूप से तैयार न हो।

हमें इससे क्या सीखना चाहिए?

- प्रभु की सेवा में कोई भी भेंट देने से पहले हमें अपने आँसुओं से पश्चाताप करना चाहिए।
- हमें अपने पुराने जीवन को पूरी तरह छोड़ने का संकल्प लेना चाहिए।
- इसके बाद ही हमारी आराधना और भेंट प्रभु के लिए ग्रहणयोग्य बनती है।
- अगर हम सीधे इत्र चढ़ा दें (बिना पश्चाताप के आराधना करें), तो वह व्यर्थ होगी।

---

## बिना शब्दों के प्रेम

### प्रेम की वजह से कैसे मिली क्षमा?

येशु ने कहा, "इसके पाप क्षमा हुए क्योंकि इसने बहुत प्रेम किया।" लेकिन उस स्त्री ने प्रेम की बात कब कही?

- उसने न तो येशु की महिमा की,
- न जयजयकार किया,
- न कोई बड़ी घोषणा की।

फिर भी, येशु ने उसके कार्यों को प्रेम क्यों कहा?

### 1. प्रेम बिना शब्दों के भी व्यक्त होता है

- उसने बिना कुछ कहे, सच्चे मन से अपने पापों को स्वीकार किया।
- उसने सच्चा पश्चाताप किया और दोबारा पाप न करने की प्रतिज्ञा ली।
- वह बिना दिखावे के, पूरी नम्रता के साथ येशु के चरणों में गिरी।

### 2. विश्वास से भरा प्रेम

- उसने येशु की ओर अपने विश्वास के साथ प्रेम प्रकट किया।
- उसका प्रेम प्रदर्शन करने के लिए नहीं था, बल्कि यह उसके हृदय की सच्ची भावना थी।

### 3. मौन प्रेम ही सच्चा प्रेम है

- वह चुप रही, उसने खुद को सही ठहराने की कोशिश नहीं की।
- उसका पश्चाताप और समर्पण ही उसका प्रेम बन गया।

#### निष्कर्ष:

येशु के नजर में सच्चा प्रेम दिखावे या शब्दों से नहीं, बल्कि सच्चे पश्चाताप, समर्पण और नम्रता से प्रकट होता है। जब कोई व्यक्ति अपने अहंकार को छोड़कर, पूरी सच्चाई और विश्वास के साथ प्रभु के पास आता है, तो वह उसके प्रेम को स्वीकार करता है और क्षमा प्रदान करता है।

---

### न्याय के दिन से बचने की बात

#### विश्वास की वजह से कैसे बच गई?

येशु ने पहले ही कह दिया था, "तेरे पाप क्षमा हुए।"

तो फिर बचने की क्या जरूरत थी?

किस चीज़ से बचने की बात हो रही है?

और जब येशु से क्षमा मिल चुकी थी, तो फिर बचाने की आवश्यकता क्यों थी?

#### 1. विचारों से बचना ज़रूरी है

प्रेम के कारण उसे क्षमा मिल गई। लेकिन अब उसे विश्वास रखना था कि जिसने क्षमा दी, वह पापों को माफ करने का अधिकार भी रखता है। यही परित्राण (उद्धार) है – केवल क्षमा पाना नहीं, बल्कि विश्वास रखना कि प्रभु ने पूरी तरह बचा लिया है।

#### 2. भविष्य के भय से मुक्ति

उसने अब तक के पापों के लिए क्षमा पाई। मगर विश्वास के कारण उसे भविष्य के न्याय के दिन से भी मुक्ति मिल गई। अब उसे डरने की जरूरत नहीं थी कि न्याय के दिन वह दोषी ठहराई जाएगी।

#### 3. केवल क्षमा नहीं, उद्धार भी चाहिए

हमारा लक्ष्य सिर्फ क्षमा पाना नहीं होना चाहिए। हमें यह विश्वास भी रखना चाहिए कि जब न्याय का दिन आएगा, तब हम प्रभु के अनुग्रह से सुरक्षित रहेंगे।

#### निष्कर्ष:

क्षमा से केवल पाप मिटते हैं, लेकिन उद्धार विश्वास से मिलता है। अगर हम केवल क्षमा लेकर छोड़ दें और विश्वास न रखें, तो हम फिर से संदेह और भय में पड़ सकते हैं। इसलिए हमें येशु में संपूर्ण विश्वास रखना चाहिए ताकि हम आने वाले न्याय के दिन भी निर्भय खड़े रह सकें।

---

## येशु के सामने कोई दिखावा नहीं

एक भी लफ़्ज़ कहे बिना और क्षमा माँगे बिना कैसे मिल गई क्षमा?

1. क्योंकि येशु हमारे मन को सुनता है, शब्दों को नहीं।

- येशु ने कई बार यह सिद्ध किया कि वह बाहरी दिखावे पर नहीं, बल्कि दिल की सच्चाई पर ध्यान देता है।
- पापिनी स्त्री ने कुछ कहा नहीं, मगर उसका मन पूरी तरह पश्चाताप में डूबा हुआ था।
- उसने अपने व्यवहार से यह साबित किया कि उसे अपने किए पर गहरा पछतावा है।

2. पश्चाताप और विश्वास ही क्षमा के लिए काफ़ी थे।

- स्त्री ने येशु से क्षमा माँगी भी नहीं, फिर भी उसे मिल गई।
- क्यों? क्योंकि उसके कार्यों से साफ़ था कि वह पश्चाताप कर रही थी और उसे येशु की दया पर पूरा विश्वास था।
- उसने विश्वास किया कि येशु ही उसे क्षमा करने का अधिकार रखते हैं, और यही विश्वास उसका उद्धार बना।

3. येशु को धोखा नहीं दिया जा सकता।

- येशु मन की गहराइयों को पढ़ते हैं, किसी के दिखावे या शब्दों से प्रभावित नहीं होते।
- इसलिए हमारी प्रार्थना में शब्दों से ज़्यादा मन की सच्चाई ज़रूरी है।
- अगर हमारे मन में सच्ची चाहत और विश्वास होगा, तो येशु बिना माँगे भी हमें वो सब देंगे जो हमारे लिए अच्छा है।

हमें क्या सीखना चाहिए?

- हमें शब्दों की औपचारिकता में नहीं, बल्कि सच्चे दिल से प्रार्थना करनी चाहिए।
- अगर हमारा हृदय सही स्थिति में है, तो येशु हमें माँगने से पहले ही वो देंगे जो हमें चाहिए।
- येशु के सामने कोई दिखावा नहीं चलता, इसलिए हमें सच्चे पश्चाताप और विश्वास के साथ उनके पास जाना चाहिए।

धन्य हैं हमारे येशु और धन्य है उनका प्रेम

Led by the Holy Spirit, Guided by Faith and Scripture

Biblical Commentary by Sonu Kumar Saha

Date: 16<sup>th</sup> February 2025

Contact: sks.officeuse@gmail.com

I sincerely thank my respected Pastor, Rev. Sahadev Nanda, for teaching this topic so profoundly and clearly. His guidance has been a great blessing, enriching both my knowledge and faith. May God continue to bless him abundantly.

With gratitude,

Sonu Kumar Saha